Department Name - Home Science
Dr. Kumari Kiran (AL-Hafeez College Ara.)

Topic details — Concept of Child Development
बाल - विकास की अवधारणा

B.A Part III Paper VI Child Psychology (बाल - मनोविज्ञान)

# Concept of Child Development
## बाल-विकास की अवधारणा

बालक एक गतिशील प्राणी है जिसमें प्रत्येक दिन कुछ न कुछ परिवर्तन होते रहते है, जो हमें उनकी शारीरिक अभिवृद्धि तथा परिपक्वता आदि के रूप में देखने को मिलते है। प्राणी में होने वाले यही अनवरत परिवर्तन ही विकास है। परिवर्तन की प्रक्रिया के कारण ही शून्य से प्रारम्भ होने वाला जीव क्रमशः शिशु, बालक, किशोर, प्रौढ़ एवं वृद्ध के रूप में विकसित होता है इसलिए बाल-विकास को क्रमिक परिवर्तन की श्रृंखला भी कहा जाता है। बालक अपने विकास क्रम में किस प्रकार विकसित होता है? कौन-कौन सी दशाएँ इसके विकास को प्रभावित करती है, इसके समुचित विकास के लिए कौन-कौन से तत्व आवश्यक एवं उपयोगी है? उपरोक्त सभी बातों का अध्ययन बाल-विकास के अन्तर्गत किया जाता है

बाल-विकास का अध्ययन कोई नया विषय नहीं है बल्कि यह अति प्राचीन काल से ही बालक के समुचित विकास के लिए बाल अध्ययन को महत्व दिया जा रहा है हमारे धार्मिक ग्रन्थो में भी इस बात को विशेष महत्व देकर कहा गया है कि अपने गर्भकाल के दौरान माँ को पूजा-पाठ में अधिक ध्यान लगाना चाहिए तथा अच्छे संस्कारों को ग्रहण करना चाहिए ताकि बालक अच्छे गुणों से सुसंस्कृत हो, क्यों कि प्राणी का जीवन गर्भाधान से ही प्रारम्भ हो जाता है बाल-विकास के अन्तर्गत बालक के विकासात्मक मनोविज्ञान का अध्ययन किया जाता है चूंकि बाल-विकास में वातावरण का महत्वपूर्ण योगदान होता है, अतः यह किन रूपों में बाल-मनोविज्ञान को प्रभावित करता है इसका अध्ययन भी आवश्यक हो जाता है

मनोविज्ञान में संवेगात्मक विकास तथा सामाजिक विकास का अध्ययन होता है, जैसे बच्चों में भय, क्रोध, प्रेम, आदि संवेगों का विकास किस प्रकार होता है तथा इनसे किस प्रकार उनकी प्रवृत्तियाँ विकसित होती है, जैसे - क्यों कोई बच्चा अपराधी प्रवृत्ति का बन जाता है?

## बाल-विकास को प्रभावित करने वाले कारक

1.) वंशानुक्रम — वंशानुक्रम से तात्पर्य बच्चो के जेनेटिक गुणों से है जो गुण आधे माँ तथा आधे पिता से प्राप्त होते है। बालक की वृद्धि तथा विकास इन्हीं गुणों पर निर्भर करते है

2.) वातावरण — बालक के भी सार्वभौम विकास मे वातावरण का बहुत बड़ा योगदान होता है। वातावरण से ही वह सकारात्मक परिस्थितियाँ उपलब्ध कराता है जिससे वह माता पिता से प्राप्त गुणो को विकसित करता है एवं अपना विकास करता है।

3.) परिपक्वता — बालको मे परिपक्वता का गुण इसलिए अनिवार्य है ताकि वह जीवन मे होने वाले परिवर्तनो को समझ सके और उसके अनुकूल व्यवहार कर सके। परिपक्वता बच्चो मे समझदारी भरा व्यवहार करने की ओर अग्रसर कराती है तथा विपरीत परिस्थिति मे भी सही निर्णय लेना सिखाती है।

4.) पोषण — शिशु को जिस प्रकार का पोषण जन्म से पहले और जन्म के बाद मिलता है, उसी पर उसका शारीरिक विकास निर्भर करता है। पौष्टिक आहार शिशु के समुचित विकास के लिए अनिवार्य है, क्योंकि इससे ही उसकी हड्डियाँ, मांसपेशियाँ मजबूत होती है

5.) टीकाकरण — बीमारियों के इलाज से बेहतर उनसे बचाव करना है बालको का सही टीकाकरण उन्हें कई रोगो से बचाता है, जिससे उनका सतत् विकास हो पाता है। बीमारी से रक्षा शिशु के शारीरिक तथा मानसिक दोनो विकास हेतु अनिवार्य है।

6.) गर्भावस्था — माता के गर्भधारण के समय स्वास्थ्य, उनका पोषण, टीकाकरण मानसिक स्थिति आदि बालको मे गर्भ के 9 महीनो मे प्रभावित करता है अतः माता स्वास्थ्य एवं तनाव रहित है, तो बालक का शारीरिक विकास गर्भ से ही उत्तम होगा इसका प्रभाव जन्म के बाद भी बच्चो विकास को सुनिश्चित करता है

7.) परिवार — परिवार बच्चो के विकास की प्रथम पाठशाला होती है, यहाँ इसका लालन-पालन होता है तथा विकास के अवसर प्राप्त होते है। जितना अधिक उसे खेलने-कूदने की सुविधाएँ एवं अवसर प्राप्त होते हो; प्रोत्साहन मिलता है उतना ही उसका शारीरिक एवं मानसिक विकास अच्छा होता है—

इस प्रकार हम देखते है बच्चो के विकास को प्रभावित करने वाले कारको में बालक-बालिकाओ मे अन्तर लिंग भेद, सामाजिक और आर्थिक स्तर, बौद्धिक स्तर मे अन्तर, नई चीजो को ग्रहण करना-सीखना इत्यादि अन्य कारको का बच्चो के आस शारीरिक एवं मानसिक विकास पर समुचित प्रभाव पड़ता है